राज कॉमिक्स

संख्या 737

उल्टा पुल्टा

गमराज

एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त

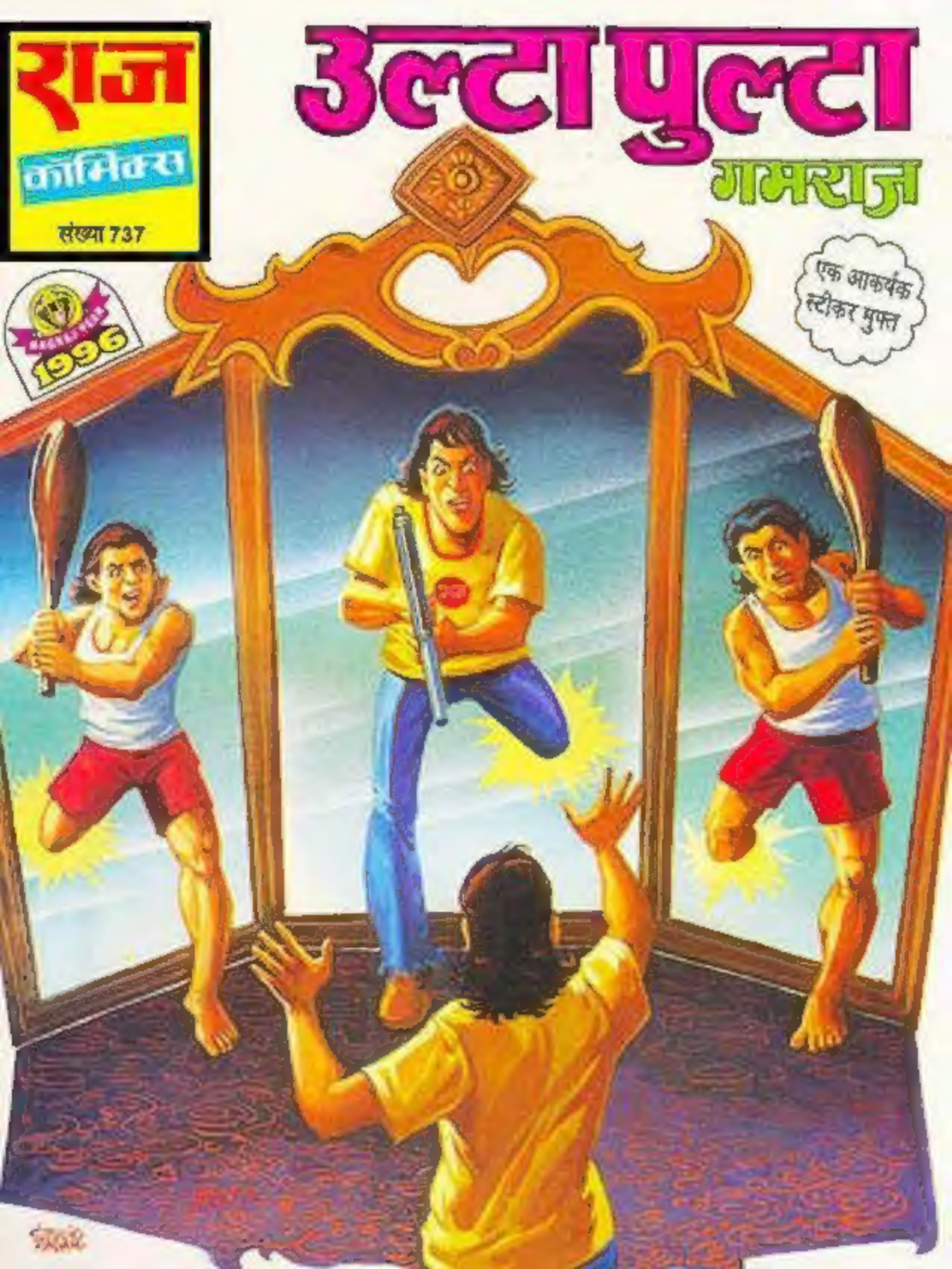

आइये। आईने के संसार में चलें। पर सावधान। आईने में झांकने की कोशिश आपको महंगी पड़ सकती है। क्योंकि वहां सबकुछ है ...

सम्पादन- मनीष गुप्ता
कथा - तरुण कुमार वाही
चित्र- आकृति फीचर्स

उल्टा पुल्टा

अपने हीरोकट बालों में उंगलियां घुमाते हुए बड़ी तेजी के साथ अपने कमरे से निकला शंकालू और दहलीज पर ही टकरा गया अपनी पत्नी बतालू से—

ओफ्फ ! जिस बात की शंका थी आखिर वो हो ही गई।

क्या ? कहीं तुम मेरी सौत तो नहीं ले आए?

बेवकूफ मोटी ! घर से निकलते वक्त तूने अपनी सूरत दिखा ही दी न मुझे !...

... अब मुझे फिर से आईने में जाकर अपनी सूरत देखनी होगी।...

... ताकि मनहूसियत का साया मुझ पर से हट जाए।

अजी मैंने कहा क्यों आईने को फिर से मनहूस की शक्ल दिखाते हो ?

ओह ! मानो कंचे जेब से निकल गए।

आह ! मरा

पापा, मम्मी को कितनी बार कहा है कि मेरी नेकर की जेब सिल दे, पर आप दोनों को तो लड़ने से ही फ़ुर्सत नहीं मिलती गुर्रर्रर्र...

सत्यानाश!

खनाक! तड़ाक!

पर अब वहां पड़े-पड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो! ज़रा कंचे उठवाने में मेरी 'हैल्प' कीजिए। गुर्रर्रर्र। हे हे हे।

बाहर मेरा दोस्त गोली पिचतानां खेलने के लिये मेरा इंतज़ार कर रहा होगा।

हाय! आईना तोड़ दिया!

जाओ। पहले आईना लेकर आओ, वर्ना घर में घुसने की जरूरत नहीं है।

मम्मी, तुमने भी पापा को ज्यादा सिर पर चढ़ा रखा है गुर्रर्र...

गुस

नया आईना तो मुझे लाना ही होगा क्योंकि अपनी शक्ल देखे बिना मैं घर से बाहर नहीं निकल सकता।

अखबारी लाल से अखबार में लपेटकर आईने को शंकालू अपने कमरे में ले आया—

अब इससे पहले कि मोटी यहां आ धमके जिसकी कि मुझे पूरी शंका है। मुझे अखबार हटाकर अपना चेहरा इस नये इम्पोर्टिड आईने में देखकर जल्दी से यहां से निकल जाना चाहिये।

शंकालू ने जल्दी से अखबार हटाया।

और —

टल गया मुझ पर चढ़ा मनहूसियत का साया।

ही ही ही। बहुत दिनों बाद मुझमें किसी ने अपना थोबड़ा देखा है।

मनहूसियत का साया टल गया था या नहीं काश कि बेचारे शंकालू को इसका पता चल पाता —

अबे ओ कहां जाता है? मुझ में अपनी सूरत देखने वाले...

... को बाहरी संसार से नाता तोड़कर आईने की दुनिया में आना पड़ता है! ही ही ही।

यह मेरी रतालू की आवाज नहीं हो सकती क्योंकि उसकी आवाज सुनकर तो मैं दहल जाता हूं। फिर ये किसकी आवाज है? अरे, बचाओ किसी ने मुझे पकड़ लिया है।

बीवी और बारह बच्चो बचाओ ऽऽऽ

!?!?

मम्मी! मम्मी! पापा शीशे में घुस गया।

तेरा बाप तो पागल था ही। अबतू भी पागल हो गया है क्या रे? ऊफ! फिर भूल गई मैं तेरा नाम? क्या नाम है रे तेरा?

मम्मी! पापा ने मेरा नाम लालू-प्रसाद रखा था। मगर वो पापा...

कम्बख्त ऐसे नामों का क्या फायदा जो जुबान पर ही न चढ़ें। आज से मैं तुम सबके नाम सब्जियों पर रखूंगी।

जैसे आलू, बैंगन, भिण्डी, तौरी, टिण्डा, करेला, पालक, प्याज, लहसुन, अदरक, कद्दू, और मिर्ची!

तब तो आपका नाम होगा सीताफल और पापा का घीया ही ही ही।

वाह यानी कि पूरी सब्जी मण्डी। हुर्रे।

मम्मी! मैं अपना नाम भिर्ची रस्यूंनी।

कहने की जरूरत कि कद्दू मेरा ही नाम होना चाहिए।

मैं टिण्डा!

और इस प्रकार उनके नये नामकरण हो गए...

तेरा पेट हर वक्त खराब रहता है। इसलिये तेरा नाम होगा लहसुन।

मैं तौरी!

फिर जब शाम तक भी न लौटा शंकालू तो बुरी तरह से चिन्तित हो उठी रतालू—

मुआ कहीं सचमुच ही तो आईने में नहीं घुस गया! हे भगवान, अगर ऐसा हो गया तो मेरा और मेरे दर्जन बच्चों का पेट कौन पालेगा?

अरे! आईना?

मम्मी! मम्मी! पापा इसी शीशे में घुस गया है।

उफ! कम्बख्त बहुत भारी है। मगर फिर भी मैं इसे छोड़ नहीं सकता, क्योंकि इसने मुझे देखा है।

इसी पल आईने से लपलपाते वे दो हाथ और—

ईईई ssss बचाओ ssss

मम्मी भी शीशे में घुस गई?

मुझे फौरन चलकर गामू चाचा को ये बात बतानी चाहिये, क्योंकि अगर इस समय मैं ये बात बताने अपने भाई-बहनों के पास गया तो वो मेरा लॉली पॉप छीन लेंगे।

इधर गमराज उस समय लगा हुआ था जिस्म को कसरती बनाने में—

शीशाहोऽऽऽ या दिल हो ऽऽऽ आखिर टूट जाता है ऽऽऽ

शीशा और दिल दोनों ही गमों के मारे हैं। न जाने कम्बख्त ये शीशा और दिल भगवान ने बनाए ही क्यों (हम्फ हम्फ)

गमू चाचा गमू चाचा

उफ! पता नहीं कहां मर गया गमू चाचा?

गमू चाचा त् कहा है?

अबे ओ शंकालू के लालूप्रसाद। मेरा इतना लम्बा-चौड़ा कसरती बदन दिखाई नहीं दे रहा तुझे।

कसरती बदन? अल्लाह की शान, तिनके में जान। ही ही ही। शुक्र कर कि किसी चिड़िया ने ठोकर नहीं जड़ दी वरना अभी तेरी ये कसरती इमारत ढेर हो जाती।

ये तो वही बात हो गई। बदन में नहीं दम। हम नहीं किसी से कम।

कसरती बदन। ही ही ही। मेरी तो हंसी ही नहीं रुक रही यह सुनकर।

और हां। आज से हम सारे भाई बहनों के नाम बदल गए हैं। मम्मी ने मेरा नाम टिण्डा रखा है। समझे। खबरदार जो अब मुझे लालू प्रसाद कहा तो। गुर्रर्रर्र...

गुर्रर्रर्र। ये आजकल के बच्चे बड़ों की इज्जत करना तो जानते ही नहीं।

पर तू मुझे जोर-जोर से पुकारता हुआ यहां क्यों आया है टिण्डे?

ओह! तेरे कसरती बदन को देखकर मैं तो बात तो भूल ही गया था। ही ही हो। पर...

आईने में मत देख, वर्ना तू भी मम्मी-पापा की तरह आईने में घुस जाएगा।

क्या मतलब?

टिण्डे ने गमराज को बताई शंकालू और रतालू के आईना प्रवेश की बात—

जिसे सुनकर चौंक पड़ा गमराज, और—

चल जल्दी से दिखा मुझे कहां है वो आईना?

चल।

गमराज आ पहुंचा आईने के सामने—

शंकालू और रतालू दोनों आईने में कैसे घुस गए? कहीं तू मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रहा टिन्डे के बच्चे!

मेरा नाम तमीज से ले गमराज चाचा! गुर्रर्रर्र...। और बेवकूफ को बेवकूफ बनाने की मुझे क्या जरूरत है!

गमराज ने आईने में झांका—

मेरी तो अभी भी समझ में नहीं आ रहा कि भला आईने में शंकालू और रतालू कैसे घुस गए?

अब जब आईना तूने देख ही लिया है तो अभी सब समझ में आ जायेगा।

आइना वही कहता है, चेहरे बदल जाते हैं। म।SSS

तभी आईने से निकले हाथों ने जकड़ लिया गमराज को।

अरेरेरे। ये हाथ किसके हैं?

मेरे हैं और क्या इतने शक्तिशाली हाथ तेरे हो सकते हैं तिनके?

उस वक्त कुछ और न सूझा टिन्डे को तो उसने पास पड़ी वह संडासी ही उठाकर गमराज का पांव उसमें दबाचने की चेष्टा की, मगर—

यह क्या? गमू चाचा की पेंट संडासी में अटक गई। बाप रे! गमू चाचा बिना पेंट के ही शीशे में घुस गया।

यमुण्डा SSS बचा मुझे!

गमू चाचा की ये पैंट मैं आंख बंद करके इसी आईने पर टांग देता हूं ताकि जब वो बाहर निकले तो हमारे सामने शर्मिंदा न होना पड़े।

क्योंकि हम तो शेम-शेम कहेंगे ही।

तभी धड़धड़ाता हुआ अन्दर आ पहुंचा यमुण्डा...

बां ऽऽऽऽऽ स्वामी की पुकार यहीं से आई थी।

यमुण्डा ने हमारे घर का दरवाजा तोड़ दिया गुर्रर्रर्र

मड़ाक!

ओह! मेरे स्वामी की वही पैंट है। जिसका इलास्टिक पिछले हफ्ते से ढीला पड़ा हुआ था।

पैंट के चक्कर में यमुण्डा की निगाहें भी आखिर पड़ ही गईं आईने पर, और--

अब इस काले-कलूटे भैंसे को भी खींचना पड़ेगा। क्या जमाना है? इंसान तो इंसान अब जानवर भी आईने में देखने लगे अपनी सूरत।

बाँ ऽऽऽ य...ये तो मुझे अन्दर खींच रहा है।

इधर आईने की दुनिया में पड़ चुके थे शंकालू के कदम--

मुझे विश्वास है कि मैं एक नरक से निकल कर दूसरे नरक में आ गया हूं।

ओह! अब समझ में आया दरअसल गलती कूड़ा फेंकने वाली की नहीं थी क्योंकि मैं ही कूड़ेदान में खड़ा था!

सत्यानाश जरूर उस आईने का कम्बख्त ने फेंका भी तो कूड़ेदान में।

कूड़ा कूड़ेदान में डालें

अरे ठहरो। मुझे विश्वास है कि अगर तुमने सड़क पार की तो तुम्हारी बीवी बस के नीचे आ जायेगी।

तभी चिल्ला पड़ा शंकालू—

तू के घना ज्योतिषी लाग रिया सै। यो चाहे बस तले आ जाए पर मैं सड़क पार तो करूं ही करूं!

चलो जी। मन्ने तो ये तुमसे भी बड़ा पागल लाग रिया सै।

लेकिन यह क्या? शंकालू की शंका आज अक्षरशः सच साबित हो गई—

लाजवंती!

कहीं बच न जाये।

जरा हट

मेरी बीवी मर गई। बहहहह। हीहीही।

कोई जल्दी से उसकी नब्ज 'कन्फर्म' करो। कहीं वो जिंदा न हो।

हे भगवान! यो तैंने के किया? मेरी बीवी 'ठा ली।

तेवा लाक्व-लाक्व धन्यवाद प्रभुजी, जो तूने बला टाल दी, पर अब मन्नै मत ठा लियो।

शब्दार्थ। ठा = उठा २. तैंने = तुमने ३. घना = ज्यादा ४. लाग रिया सै = लग रहा है।

अबे तू कौन है भाई? और अब तक कहां था? तुझे कैसे पता लगा कि मेरी बीवी बस के नीचे आ जायेगी?

मेरा नाम शंकालू है। मुझे अचानक ऐसा लगा और मेरी बात सच हो गई।

आप तो अंतर्यामी हैं शंकालू जी।

दूसरे नम्बर पर आईने के संसार में पहुंचने वाली थी खतालू—

ओह! मैं तो अपने स्वामी शंकालू की खोज में निकली थी और आईने ने मुझे न जाने कहां पटक मारा है।

स्वामी के बिना तो मैं एक पल भी नहीं रह सकती! कहां छुपे हो नाथ?

और तभी—

वो रहे स्वामी! भेल-पूरी खा रहे हैं।

स्वामी! मेरे स्वामी!

खबरदार खतालू जब-तक मैं भेल पूरी नहीं खा लेता कान पकड़ कर वहीं खड़ी रह। हिली तो यहीं से भेल-पूरी का दोना खींचकर मारूंगा। सावधान!

बम्बे की स्पेशल भेलपूरी

मेरे लिये तो पति आज्ञा भगवान की आज्ञा के समान है। जब तक आप नहीं कहेंगे स्वामी, मैं यहां से हिलूंगी भी नहीं! भले ही मेरे मुंह से लार की बाढ़ बह निकले।

हरपल शंकालू पर गरजने वाली बिजली आज भीगी बिल्ली कैसे बनी हुई थी—

तीसरे नम्बर पर आईने के संसार में पहुंचने वाला था गमराज—

ओह! आईने ने मुझे कहां ला पटका।

हाय! कानी-कौड़ी थोड़कर भी न मरा तू बापू!

और इसी पल घूमा गमराज का हाथ—

तेरा बाप मरा है तो दुनिया को पता लगना चाहिए। जोर से रो। वर्ना देता हूं एक और कस के।

तड़ाक!

अरे! इतना ही तू कंगाल था तो फिर मेरे पैदा होते ही तूने अपना गला क्यों न घोट लिया रे।

उवांSSS इतनी जोर से ठीक है न?

हां! तुम सब क्या इसके बाप की शादी में आए हो। इतना रोओ की आसमान भी रोने लगे।

धड़ाक

हां। अब लग रहा है कि तुम सब वाकई इसके गम में आए हो।

उवां

उवां

उवांSS पर मैं क्वामख्वाह नहीं रो रहा। बुड्ढा मेरा उधार चुकता किए बिना मर गया। तुझे नरक नसीब हो बुड्ढे!

मोहल्ले में एक ही तो था जो मुझे छेड़ा करता था-उवां... उवां!

बुड्ढा मर गया। हम क्वामख्वाह रो रहे हैं।

बुड्ढा मर गया। चलो अच्छा हुआ रे। दो हजार रुपये बीस साल पहले मैंने उससे उधार लिये थे, अब वो देने नहीं पड़ेंगे। उवां!

फिर जैसे ही गमराज वहां से चलने लगा कि विलाप करते लोगों ने उसे घेर लिया-

इसने हमें मारा

तोड़ दो सब मिलकर कम्बख्त की हड्डियां।

अरे! मगर मैं तो समझ रहा था कि ये सब मुझसे डर गए। बाप रे।

दूसरे ही पल—

बाजू की मैं तोड़ूंगा।

नाक की मैं।

कमर की मैं।

टांग की मैं।

मेरा बाप मर गया है। मुझ पर रहम करो। कुछ मेरे लिये भी छोड़ देना।

यमुण्डा। बचा मुझे। कहां है रे तू?

ओह! ये आवाज तो स्वामी गमराज की है पर काहे का स्वामी! थोड़ा पिट लेगा तो कमर सीधी हो लेगी(ही ही ही।

क्यों भैया? तेरे यहां क्या लड़की पैदा हुई है? तू चुपचाप क्यों खड़ा है? रुक हाथ तू भी सेंक दे गमराज पर।

यमुण्डा के बच्चे। मुझे पिटवा रहा है। तुझे देख लूंगा।

अबे जा। ज्यादा नहीं बोलने का है। करना दूंगा सींग जड़के। आऊं। गुर्रर्रर्र।

अब तो मुझे ही कुछ करना पड़ेगा।

और फिर तो गमराज ने कमाल ही कर दिया—

धांड़

बचाओ

धाड़ड़ड़

गमराज का रौद्र रूप देखकर लोग फिर से विलाप करने लगे और तभी उधर से गुजरते शंकालू की निगाह उस शव पर पड़ी और—

मुझे विश्वास है कि तुम सब इतनी जोर से रोओगे तो ये बुड्ढा फिर से जिन्दा हो जायेगा।

शंकालू!

अगर ये जिन्दा हो गया तो मैं इसका गला घोंट दूंगा।

और तभी जैसे चमत्कार हो गया—

उऽऽऽऽऽऽऽम जम्हाई ओह! खुशी के मारे तो मैं बेहोश ही हो गया था।

अरे बेटा पप्पू! जरा दौड़कर अंदर से मेरा बैग तो ले आ। उसमें लाटरी का वो टिकट है जिसपर पांच लाख रूपये का पुरस्कार निकला है।

प...प...पांच लाख!

स्वीटी डार्लिंग, कैसी हो?

शंकालू का बच्चा यहां भी पहुंच गया, मेरा पीछा करते-करते।

आप धन्य हैं। आप कौन हैं महाराज? आप की कही बात सत्य हो गई। आप बात इतने विश्वास से कैसे कहते हो। बुड्ढा मेरा मतलब मेरा बाप जिंदा हो गया वरना मुझे लाटरी के उस टिकट का पता न चल पाता।

और तभी—

शंकालू जी ! अभी थोड़ीदेर पहले आपने कहा था कि मेरे पड़ोसी की टांग टूट जायेगी। वो छत से गिर गया है और ये बैसाखी मैं उसी के लियेले जा रहा हूं।

शंकालू के इर्द-गिर्द भीड़ लग गई—

शंकालू जी ! कृपया कर बतायें कि मेरे पड़ोसी की टांग कब टूटेगी ? मैं उसकी मूर्तियां चुराकर खा जाता हूं और वो हरदम मुझसे लड़ता रहता है।

शंकालू जी ! मेरे बाप की लाटरी कब निकलेगी?

मेरी सास कब मरेगी शंकालू जी !

ये शंकालू ने यहां क्या चक्कर चला लिया?

इधर शंकालू के मन में उठ रहा था वह विचार—

ओह ! क्यों न इनकी शंकाओं के लिये मैं इनसे मुंहमांगी कीमत वसूल करूं। इस प्रकार आज से मेरी नौकरी की तलाश का काम भी खत्म हो जायेगा।

मैं सभी की शंकाओं का समाधान करूंगा पर आपको मेरे लिए जगह का प्रबंध कराना होगा।

ईंगें मारने में अपने बाप का क्या जाता है।

इंतजाम हो जायेगा शंकालू जी !

हमारा शौचालय काफी बड़ा है।

तभी शंकालू की नजरें पड़ीं गमराज पर और—

अरे गमराज ! मेरे यार, मैं तो तुम्हारे ही पास आ रहा था, मगर उस जादुई शीशे ने मुझे यहां ला पटका। और यहां तो मेरे धंधे का भी इंतजाम हो गया है।

और वो देखो। मेरी बीवी कैसी गाय सी बनी मेरे पीछे खड़ी है... पता नहीं इसे क्या हो गया है ?

हां, हां, ठीक है।

तू अपनी दुकान चला मगर ध्यान रखियो, जब मैं हफ्ता वसूलबे आऊं तो चुपचाप हफ्ता मेरे हवाले कर दियो वरना तेरी दुकान तेरे समेत उखाड़कर फेंक दूंगा।

अरेरेरे ! यह क्या करते हो ? मैं तुम्हारा दोस्त हूं गमराज !

धंधे में कोई दोस्ती, यारी नहीं। समझा। चल अब फूट ?

गमराज को क्या हो गया ? बबूबूबू।

गमराज पहुंचा यमुण्डा के पास—

यमुण्डा! चल जल्दी से जीप वाहन बन जा। क्योंकि अब मैं यहां के लोगों से हफ्ता वसूलने निकलूंगा।

मुझे क्या तूने अपने बाप का नौकर समझ रक्खा है।

ओ भाइयो! तुम शक्ल सूरत से कमीने, बदमाश, लुच्चे, लफंगे, चोर, डाकू, उठाईगिरे, गुण्डे लग रहे हो। जरा इस गुण्डे गमराज को ठीक कर दो ये कहता है कि हफ्ता वसूलेगा।

??

हमारे इलाके में हफ्ता वसूलने वाला ये कौन कच्छा पहलवान आ गया?

खाल उतारनी पड़ेगी।

और भुस भरना पड़ेगा।

कालिया उस्ताद! इसकी टांगें तोड़नी पड़ेंगी।

V.I.P.
UNDERWEAR

गमराज को चारों गुण्डों ने घेर लिया—

क्यों बे कच्छा पहलवान ? तेरा जिंदगी से दिल भर गया है क्या, जो तू कालिया के इलाके में अपनी टांग अड़ाने आ गया ?

कच्छा पहलवान ! तूने मुझे कच्छा पहलवान क्यों कहा ?

धम!

अब भुगत सजा।

ओह! बहुत ताकत है रे तुझमें। अभी बराबर किये देता हूं बांSSS

यमुण्डा के बच्चे ये तू क्या कर रहा है ?

कालिया उस्ताद पर हाथ उठाता है तोड़ दो हाथ।

फिर टांग !

फिर खोपड़ी!

फिर जो बचे।

जब तक ये पिटे मैं थोड़ी हरी-हरी दूब चर लूं। बांSSSS

जबकि गमराज ने भी हिम्मत नहीं हारी थी—

गमराज से तुम्हारा पाला पहली और आखरी बार पड़ा है अक्ल के खीरो।

ईंट
अरे, कौन है यह
जो मेरी ओर पत्थर
फेंक रहा है ?
कहीं वह
मेरा भतीजा तो
नहीं ?
कुत्ता

तेरा क्या होगा कालिया ?

स...सामने परचून की दुकान से नमक खरीद कर दे दो। मैं खा लूंगा। फिर कहूंगा मैंने तुम्हारा नमक खाया है।

ठीक है। पर आज के बाद तुम अपने को सलाम मारोगे।

ठीक है गमराज उस्ताद !

और अब ये बता कि तूने मुझे कच्चा पहलवान क्यों कहा था?

क्योंकि गमराज उस्ताद ! तुमने तो पैंट पहन ही नहीं रखी।

क्या ? म...मेरी पैंट कहां गई ? खूऽऽऽ।

ओह,लगता है तो उस समय बाहर ही रह गई थी। जब मैं आइने के अन्दर गया।

लेकिन अब अगर मैंने इनके सामने यही बात जाहिर की तो मेरी सारी दादागिरी कचरा हो जायेगी

अब तो मुझे कच्चा पहलवान गमराज बनकर ही यहां रहना होगा।

कच्चा पहलवान के नाम से अपनी धाक जमाने के बाद गमराज कालिया उस्ताद के साथ हफ्ता वसूलने के काम पर निकल पड़ा।

हफ्ता जो दे उसका भला...

...जोन दे उसका दही-भल्ला

आऽऽऽऽ ह! छोड़ दो। मेरा दही-भल्ला मत बनाओ। मैं हफ्ता अगले हफ्ते दे दूंगा।

पर याद रक्खियो। अगली बार हफ्ता टाइम पर न मिला तो हम सौंठ भी डालेंगे।

गमवाज उस्ताद! ये सौंठ क्या बला होती है?

सौ से सौ। ठ से ठोकर, मतलब सौ ठोकरें।

चल बे। हफ्ता निकाल।

ह...हफ्ता म...मगर अभी तो बोनी भी नहीं हुई।

तो फिर ठीक है पहले हम तेरी बोनी करते हैं...।

मगर माल से नहीं मछ से।

आह! बचाओ मगर बचाएगा कौन? क्योंकि यहां पुलिस तो बची ही नहीं। जो थोड़े-बहुत पुलिस वाले यहां पर थे वे अस्पताल में अपनी टूटी हड्डियों का इलाज करा रहे हैं। अबे! मगर मार क्वार्टर हुक में इतना बड़ा बॉयलॉग कैसे सोच गया...

टैम-टैम की बात है। चलो अब चिल्लाता हूं आह... मर गया।

इधर आईने से बाहर कुर्ता की चालों में अचानक मच गई थी भगदड़। क्योंकि वहां आ पहुंचा था इंस्पेक्टर लीलाधर चौकसे –

हवलदार अकड़कर बार-बार सीटी बजाते रहो! मक्खना जेल से भागकर इधर ही आया है।

पुलिस सीटी की आवाज सुनकर उसे पता चल जायेगा कि हम अभीतक यहीं हैं।

पीं पीं पीं

और वह अपनी मांद से बाहर नहीं आयेगा।।

मैं सीटी इसलिये ही तो बजायेला हूं हजूर कि मक्खना जहां है, वहीं छिपा रहे। शायद आपको पता नहीं है हजूर कि मक्खना ने चार मर्डर कियेला है। क्या? पीई sss

पीं पीं

अपुन डाकू है डाकू। डाके डालता है। खून करता है। तुम चिल्लर शोर नहीं मचाने का है। वरना अपुन तुम्हें स्वर्गलास कर देने का हौसला रखता है।

इधर चौकसे की आंखों में धूल झोंककर मक्खना घुसा हुआ था शंकर की चॉल में –

मक्खना उन सब को लेकर दूसरे कमरे में पहुंचा –

ओह! वह रहा शीशा, अब अपुन यहां से वेश बदलकर निकल जायेगा और चौकसे की सारी चौकसी धरी की धरी रह जायेगी! ही ही ही।

लक्खूना, आज क्या हो गया तुझे। इसके निकट जाकर बम छोड़ दे!

पर उसके हाथ में बंदूक है।

करेले! तेरे पास चमक मारने वाला शीशे का टुकड़ा था न। जल्दी से उसे निकाल क्योंकि बाहर पुलिस आई हुई है।

वाह! क्या आइडिया मारा है तोरी दीदी ने।

मैं यहां से औरत का वेश बनाकर निकलूंगा। ही ही ही। और मैं औरत का वेश बनाने के लिये लिपस्टिक, बिन्दी, झुमके, साड़ी, पेटीकोट, ब्लाऊज, नकली जूड़ा ले आया हूं।

करेले ने चौकसे की आंखों पर मारी शीशे के टुकड़े की चमक —

ओह! यह क्या? यह चमक कौन मार रहा है?

हुजूर! उधर खिड़की पर कुछ बच्चे ये शरारत किये ले हैं। और वो सब 'हैल्प' का नोट अपने हाथों में लिये हैं हुजूर...!

लगता है मक्खना उसी चाल में है। मैं सीटी बजाता हूं।

अब तू चाहे भौंपू बजाले पर मक्खना चौकसे चाक चौबंद के हाथों से नहीं बचेगा।

हुजूर, नाक जाइये। पुलिस का इस प्रकार गुंडे, बदमाशों के पीछे जाना ठीक नहीं।

लेकिन तब तक मक्खना देख चुका था आईने में और तभी—

??

अरेरेरे। शीशे में से दो हाथ निकलकर मुझे अंदर क्यों खींच रहे हैं?

यह क्या? आईने के हाथ?

ओह! मैं तो तुम्हें बताना ही भूल गया था कि इस शीशे में देखो तो दो हाथ निकल कर सामनेवाले को अंदर खींच लेते हैं!

रुक जाओ मक्खना वरना गोली मार दूंगा।

अबे, शीशे में कैसे घुस गया?

बंदूक हाथ में हो तो हुजूर कोई कहीं भी घुस सकता है। अब वापस चलते हैं।

अगले ही पल—

अबे गोली चला। मेरा मतलब है हुजूर गोली दागिये। वरना ये हमें घसीट लेगा।

इसने मेरे बाज़ू इस कोण से पकड़ रखे हैं कि अगर मैंने गोली चलाई तो वो इसे नहीं लगेगी। फिर स्वामक्खनवाल्ट रुक गोली का नुकसान क्यों करूं!

आह!

उफ!

पटाक!

चलने लगा इंस्पेक्टर चौकसे पर भी आईने का जादू यानी वो भी सोचने लगा ऊल्टा—

ओह! दाल बनाने की भट्टी। हवलदार अकड़कर! खिसक ले यहां से। किसी बदमाश की नजर पड़ गई तो वर्दी उतार लेगा और हमारे पास दूसरे कपड़े भी नहीं हैं।

पर हुजूर। बिना वर्दी के आप कैसे झांपू से लगेंगे! क्या? ही ही हो।

हुजूर। मैंने तो अपनी टोपी में दो छेद कर लिये हैं। और टोपी लटका दी है नाक और कान पर। अब मुझे तो कोइच नहीं पहचान पायेगा कि मैं हवलदार अकड़कर हूं। क्या?

मैं भी ऐसा ही करता हूं। और अपनी कमीज और बेल्ट उतार कर कंधे पर टांग लेता हूं।

अब ठीक है न हवलदार अकड़कर! कोई मुझे पहचानेगा तो नहीं।

जब तक मैं किसी को नहीच बताऊंगा। कोई आपको नहीच पहचानेगा हुजूर! पर अब मुझे डांट मत लगाइयेगा। क्या?

तभी—

हुजूर! ये तो अपना मक्खनवा है। क्या?

अबे हां! इसी का तो हम पीछा कर रहे थे। कहीं ये हमें पहचान तो नहीं लेगा वरना बहुत मारेगा।

मुझे अपना शिष्य स्वीकार करें गुरुदेव! मैं आपकी शरण में आया हूं।

बुद्धम् शरणम् गच्छामी।

तभी पड़ ही गई मक्खना की उन पर नजर–

अरे, ये तो इंस्पेक्टर चौकसे है। इसे तो मैं किसी भी रूप में पहचान सकता हूं। इंस्पेक्टर साहब! मैंने आपको बहुत सताया है। पर अब मैं साधू बन गया हूं। पहली भिक्षा आपसे ही लूंगा। भिक्षाम् दे।

हवलदार अकड़कर भागो।

क्या जमाना आ गया है हुजूर! पुलिस वालों से भिक्षा मांगते हैं। तौबा।

इंस्पेक्टर चौकसे तो मक्खना के हाथ नहीं लगा, मगर मक्खना टकरा गया गमराज से–

अरे, गमराज तुम! मुझे पहचाना! तुमने ही मुझे एक दिन अंदर करवाया था।

हां, हां, ठीक है। हफ्ता निकाल।

और यही वह पल था जबकि यमराज हमेशा की तरह अपने पुत्र की खैरियत जानने के लिये पृथ्वी का दृश्य देख रहे थे–

नजाने आज किसके गम में दुखी हो रहा होगा मेरा पुत्र गमराज?

हफ्ता?

गमराज! हफ्ता वसूल करना तो गुण्डे, मवालियों और बदमाशों का कार्य है। तुम तो भले इंसान हो। दूसरों के गम के मारे। तुम्हें ये सब बातें शोभा नहीं देतीं।

??

और बस। जैसे मक्खना ने यमराज को गाली दे दी हो।

मैंने तुझको हफ्ता मांगा और तू मुझे उपदेश देने लगा। अब तुझसे पूरा महीना लूंगा।

आह! साधू पर हाथ उठाता है। पाप चढ़ेगा।

धा ड़!

मारो इसे। मार-मार कर इसके बाल सुजा दो।

ओह!

धा

धड़ाक! धम!

और वह सब दृश्य देखकर चौंक पड़े यमराज—

चित्रगुप्त! चित्रगुप्त! हमें फौरन पृथ्वी पर जाना होगा।

जहां तक मुझे ध्यान पड़ता है महाराज कि पृथ्वी पर अब ऐसा कोई परोपकारी व्यक्ति नहीं बचा, जिसकी आत्मा लाने आप खुद जायें।

किसी की आत्मा लाने नहीं चित्रगुप्त! हमें तो अपने पुत्र यमराज की फिक्र है जो हमेशा किसी न किसी के गम को दूर करने के चक्कर में मुसीबत में फंसा मिलता है। मगर आज तो वह खुद दूसरों के लिये मुसीबत बना हुआ है।

ओह! तब तो आप को अतिशीघ्र जाना चाहिये महाराज!

EXIT

चलो इसी बहाने मैं भी आज अपने पुत्र के कान खींच लूंगा।

वृषभराज पर सवार होकर यमराज ने सीधे यमराज के घर पर ही लैण्ड किया—

यमराज

मेरी दिव्य दृष्टि यहां यमराज का पता क्यों नहीं बता रही। यमराज इस वक्त घर पर भी नहीं है। तो फिर जरूर शंकालू को पता होगा कि वह इस समय कहां गया हुआ है ?

लेकिन—

शंकालू भी घर पर नहीं है। उसके बच्चों से ही चलकर पूछता हूं।

यमराज के आदेश पर उस समय वृषभराज भी गायब हो गया-

यमराज सीधे अन्दर आ गए—

क्यों बच्चे! तुम्हारे पिताश्री कहां हैं ?

पिताश्री! ही ही ही। मोटे अंकल! क्या आप रामलीला से भागकर आए हैं ?

आपको तो इतना भी नहीं पता कि हम स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे अपने पिता को पापा या डैडी या डैड या पॉप या अब्बा या बाप या पापे कहते हैं।

ओह! कहां हैं तुम्हारे पिताश्री ?

उस शीशे में घुस गए। जो भी उसमें देखता है वो उसमें घुस जाता है। देख के देख लो।

इसलिये हम यहां बैठकर उनके लौटने का इंतजार कर रहे हैं। मिर्ची दीदी हमें शीशे में देखने ही नहीं देती।

यमराज ने आईने में देखने में एक पल भी न गंवाया—

बड़ी अजीब सी बात है कि आईने में देखने पर कोई आईने में ही खिंच जाए। इस रहस्य का फौरन पता लगाना होगा।

ओह! यह क्या ? ओह तो यही वे जादुई हाथ हैं।

मगर इनकी इतनी मजाल कहां कि मुझे जबरन अंदर रवींच सकें। मैं अपनी मर्जी से जाऊंगा।

आईने की दुनिया में पदार्पण हुआ यमराज का —

वृषभराज! मुझे इस जगह का भ्रमण कराओ।

भ्रमण?

तेबी टांगें क्या टूट गई हैं मोटे? उतर नीचे और पैदल चल।

धड़ाम!

वृषभराज! यह क्या कर रहे हो? उफ!

वृषभराज! मुझे भ्रमण कराओ वरना मैं तुम्हें शाप दे दूंगा।

अबे जा, बड़ा आया शाप देने वाला, चल फूट।

यहां पहुंचते ही वृषभराज को क्या हो गयो? खैर मैं पैदल ही आगे बढ़ता हूं।

और तभी यमराज की निगाहें पड़ीं इंस्पेक्टर लीलाधर चौकसे और मक्खना पर —

अबे! ये तो इंस्पेक्टर चौकसे है। पर ये डाकू मक्खना से डर कर क्यों भाग रहा है?

और डाकू मक्खना ने भी गेरुवा वस्त्र धारण किये हुए हैं। तो क्या मक्खना साधू बन गया है?

ओह यह क्या? ये तो शंकालू है। जो शंकाएं प्रकट करने की दुकान खोल कर बैठा है। और मेरी दिव्य शक्ति मुझे बता रही है कि इसकी प्रकट की हुई सारी शंकाएं सच हो रही हैं।

शंका शंकर दुकान

कुछ और आगे बढ़ते ही यमराज की निगाहें पड़ीं यमुण्डा पर —

यमुण्डा ! ओह । ये तो यहां भैंसों के साथ स्नान कर रहा है । बेशर्म कहीं का ।

बोल कजरी बोल संगम होगा कि नहीं ।

नहीं । कभी नहीं । हुंअ ।

कुछ और आगे बढ़ते ही —

राम नाम सत्य ...

सत बोलो गत है ....

अरे ! यह क्या ? जीवन देने वाले की आंखों के सामने कोई मर जाए तो लानत है उसकी शक्ति पर ।

आईने का जादू चल गया था यमराज पर भी —

दूसरे ही पल यमराज के चमत्कार से जीवित हो उठा मुर्दा —

मैं कहां हूं ?

भूत, भागो ।

मुर्दा जिन्दा हो गया ।

भ..भूत

अरे ! मैं भूत नहीं हूं कहां भाग रहे हो । मुझे खोलो ।

उसी पल हुई एक आकाशवाणी ने झंझोड़ दिया यमराज के मस्तिष्क को —

यमराज ! तुम जीवन के नहीं मृत्यु के देवता हो । अपने मस्तिष्क को नियंत्रित करो। और आईने की इस जादुई दुनिया से निकल कर आईने को तोड़ दो क्योंकि ये आईना अलाईन के ताऊ का है जो कबाड़खाने से किसी तरह बाहर आ गया है । इस आईने की ये विशेषता है कि जो भी इसमें देखता है वो आईने में खिंच जाता है । जहां पहुंच कर उसकी सोचें एकदम उल्टी-पुल्टी हो जाती हैं ।

और उस आकाशवाणी के सुनते ही जैसे यमराज की समझ में सबकुछ आता चला गया—

ओह! तब तो मुझे फौरन उस व्यक्ति की आत्मा को वापस खींचना होगा।

मैं जिन्दा... आह...

इधर गमराज पहुंचा हुआ था शंकालू की दुकान पर—

शंकालू! चुपचाप हफ्ता दे दे। क्योंकि तू यहां बैठा-बैठा मोटी कमाई कर रहा है।

मगर मैं तुझे हफ्ता नहीं दूंगा। ये मेरे गाढ़े पसीने की कमाई है।

अबे हफ्ता तो तेरा बाप भी देगा।

नहीं।

धिशुम!

रतालू ने जकड़ली गमराज की गर्दन—

मेरे स्वामी पर हाथ उठाया तूने गमराज! मैं तेरा गला दबा दूंगी।

आह! कालिया, मैंने तुम्हें अपना नमक खिलाया है। मुझे इस मोटी से छुड़ाओ।

जहां छिड़ गई भयंकर लड़ाई—

हफ्ता तो तुझ से लेकर ही छोड़ूंगा शंकालू!

और मुझे शंका है कि...

धड़ाक!

तेरी शंका की तो ऐसी की तैसी।

ही ही ही। तुम चार हो और मैं हूं अकेली।

कालिया! ये अकेली है और हम चार।

हां। पर इसके आगे फिर भी हम बेकार।

इधर यही वो पल था, जब यमराज अपनी इच्छा से आईने से बाहर निकले—

अब सर्वप्रथम इस आईने को तोड़ना होगा।

अरे! मोटा तो बाहर आ गया। इससे पापा-मम्मी के बारे में पूछते हैं।

तब—

अरे! इसने तो आईना तोड़ दिया। मारो मोटे को।

खबरदार!

मैं इसे प्रकार सुभोती हूं।

आईने के टूटते ही सब उस कमरे में प्रकट हो गए...

शंकालू!

आंय! आईना फिर तोड़ दिया टिण्डे के बच्चे ने।

गमराज!

स्वामी!

स्वामी!

ओह। शुक्र है। ये सब के सब वापस लौट आए।

पिताश्री! आप यहां?

पिताश्री! आप यहां?

और फिर यमराज ने उन्हें बताई सारी स्थिति—

तो—

ये सब इनका किया धरा है। एक काम भी ठीक से नहीं होता! चलो, नया आइना लेकर आओ।

हा हा हा हा

समाप्त